" परवार-बन्धु " जबलपुर के पांचवें वर्ष का पांचवां उपहार।

वीर निर्वाण पूजा

[वीर भजनावलि सहित]

रचयिता—

बाबू दुलीचंद जैन।

ॐ

* श्री वीतरागाय नमः *

श्री वीर निर्वाण पूजा

और

वीर भजनावली

श्रीयुत बाबू दुलीचंद जैन, मंत्री श्री दिगम्बर
महावीर जैन पाठशाला–सतना (रीवां)
द्वारा रचित।

श्रीयुत पंडित जमनाप्रसाद प्रधानाध्यापक उक्त
पाठशाला द्वारा प्रकाशित।

श्रीयुत मास्टर छोटेलालजी; सञ्चालक "परवार-बन्धु"
द्वारा रेवा विलास प्रेस, जबलपुर में मुद्रित हुई।

श्री वीर निर्वाण स० २४५३–अक्टूबर सन् १९२७ ई०

प्रथमावृत्ति २००० | विक्रमाब्द १९८४ | मूल्य ।) आना

भूमिका

यों तो श्री भगवान महावीर के अगाध-किन्तु, पवित्र चरित्र के गुणानुवाद करने में गणधर से लेकर, महान आचार्य तक असमर्थ रहे हैं। तो भी भक्त जनों ने अपनी २ शक्ति अनुसार-उन पुनीत चरणों में,भक्ति पुष्पांजलि अर्पित करने में यथा शक्ति चेष्टा की है।

अभी तक हमारे देखने में, अनेक विद्वानों द्वारा इसी विषय की रची हुई, अनेक पूजाएं देखने में आईं। वे ललित एवं मधुर अवश्य हैं-तो भी इसमें लेखक महोदय ने भक्ति वश समयानुकूल भावों-एवं उसी प्रातःकालीन रागनियों में, उक्त पूजा को रचने का विशेष प्रयत्न किया है। यही इसमें नवीनता है।

हमें पूर्ण आशा है-कि, नूतनता उपासक विद्वान मंडली में इसका तो अवश्य ही सन्मान होगा-किंतु, हमें अपने पुरातन प्रेमी विद्वानों से भी यही प्रार्थना करनी है, कि वे इस पुस्तिका का एक एकान्त सेवी लेखक की नवीन कृति को समझकर अलग न कर दें। क्यों कि:—

कृतिः पुराणा सुखदा न नूतना, न भाषणीय वचनं बुधैरिदम्।
भवन्ति भव्यानि फलानि भूरिशो, न नूतनं हा किं प्रसव प्रसूतिनः॥

अर्थात् 'प्राचीन कविता ही सुखदायक होती है नवीन नहीं' यह वाक्य विद्वानों को शोभा नहीं देता। वृक्षों में प्रति वर्ष नये फल फलते हैं-तो क्या वे विगत वर्षों के फलों के समान स्वादिष्ट और मधुर नहीं होते?

सहृद् पाठकों के हाथ में इस पुस्तक का यथेष्ट आदर-और प्रचार हो, यही हमारी कामना है।

सतना (रीवां)
ता: १४-१०-२७ ई०

समाज सेवक—
—हुकमचंद नारद।

समर्पण ।

अपनी स्नेहमयी-साध्वी

एवं स्वाध्याय-निरता

जीवन सहचरी

की पवित्र

स्मृति

में

सतना—
दिवाली २४५३

विदग्ध हृदय—
दुलीचन्द जैन ।

❀ ॐ ❀

बाबू दुलीचंद जी सतना निवासी रचित पूजन भजनादि।

श्री महावीर-पूजा।

* दोहा *

त्रिसला माता लाड़ले, सिद्धारथ नृप नंद।
पूजों सन्मति चरण युग, हरो कर्म के फंद॥
अंतिम तीर्थंकर प्रभू, धर्म पोत करतार।
भवदधि बूड़त जीव को, पार उतारन हार॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्रेभ्यो नमः अत्र अवतर अवतर। संवौषट। इत्याव्हानं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ। ठः ठः। स्थापनं।
अत्र मम सन्निहितो भव २ वषट संनिधीकरणं

अष्टक।

जोगिया—विधि ज्ञानावर्ण विनाशी, प्रभु केवलज्ञान प्रकाशी।
शुचि नीर सु लाय चढ़ाऊं, मम रोग त्रषा सु नशाऊं॥
सन्मति प्रभु सन्मति दाना, हरिये मम नाथ असाता।
पावापुर सें शिव पाई, हम पूजत प्रीति लगाई॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्रेभ्यो जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा

दर्शन आवरण खिपायो, जब केवल दर्शन पायो ।
चंदन घिस नीर मिलाऊं, प्रभु चरनन अग्र चढ़ाऊं ॥
सन्मति प्रभु सन्मति दाता, हरिये मम नाथ असाता ।
पावापुर में शिव पाई, हम पूजत प्रीति लगाई ॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्रेभ्यो संसार ताप विनाशय
चंदनं निर्वपामीति स्वाहा

प्रभु करम वेदनी चूरा, लह अव्यावाध हजूरा ।
निर्मल अक्षत भर लाऊं, अक्षय पद तुरत उपाऊं ॥
सन्मति प्रभु सन्मति दाता, हरिये मम नाथ असाता ।
पावापुर में शिव पाई, हम पूजत प्रीति लगाई ॥

ॐ ह्रीं महावीर जिनेन्द्रेभ्यो अक्षयपद प्राप्तये
अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा

जिन मोह सुभट भट मारा, सम्यक गुण लह सुखकारा ।
शुचि पुंज धरों सुखकारी, मम काम व्यथा निरवारी ॥
सन्मति प्रभु सन्मति दाता, हरिये मम नाथ असाता ।
पावापुर में शिव पाई, हम पूजत प्रीति लगाई ॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्रेभ्यो कामवाण विध्वंसनाय
पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा

रिपु आयु करम निरवारी, अवगाहन गुण लहप्यारी ।
लै मिष्ट सचिक्कन व्यंजन, कीजे मम भूख प्रभंजन ॥
सन्मति प्रभु सन्मति दाता, हरिये मम नाथ असाता ।
पावापुर में शिव पाई, हम पूजत प्रीति लगाई ॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्रेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा

जब नाम करम तुम नाशी, गुण सूक्ष्मत्व परकाशी ।
कर दीप धरों उजयारी, अज्ञान तिमर हो क्षारी ॥
सन्मति प्रभु सन्मति दाता, हरिये मम नाथ असाता ।
पावापुर में शिव पाई, हम पूजत प्रीति लगाई ॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्रेभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा

विधि गोत्र कर्म रिपु मारा, भये अगुरू अलख भँडारा ।
लै धूप दशांग चढ़ाऊँ, बसुकर्म की धूम उड़ाऊं ॥
सन्मति प्रभु सन्मति दाता, हरिये मम नाथ असाता ।
पावापुर में शिव पाई, हम पूजत प्रीति लगाई ॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्रेभ्यो अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा

प्रभु अतुल वीर्य के धारी, भये अंतराय विध टारी ।
दाड़िम फल लौंग सुपारी, लै पूजों तुम जग तारी ॥
सन्मति प्रभु सन्मति दाता, हरिये मम नाथ असाता ।
पावापुर में शिव पाई, हम पूजन प्रीति लगाई ॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्रेभ्यो मोक्ष पद प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा

वसु विधि रिपु प्रभु क्षय कीना, लह मोक्ष सुथान प्रवीन
जल फल वसुद्रव्य मिलाके पूजों जिन चरन चढ़ाके
सन्मति प्रभु सन्मति दाता, हरिये मम नाथ असाता ।
पावापुर में शिव पाई, हम पूजन प्रीति लगाई ॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्रेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा

* दोहा *

पावापुर के गहन तें, पद्म सरोवर बीच
केवलज्ञान उपाय के, हरे कर्म अघ नीच ॥
इन्द्र सुरासुर आय के, स्तुति करी बनाय ।
हम हू इस थानक विषें, पूजें प्रभु के पाय ॥

जयमाल ।

[प्रभाती ।]

निरखत छवि महावीर, हरषत मन भायो ।
जिमि चकोर चन्द ओर, निरख सुखद पायो ॥ टेक ॥
भव्यन हित हेत धार, कीनो प्रभुजी विहार ।
दीनो धर्मोपदेश, सुनत प्रमुद छायो ॥ टेक ॥
योजन शतलों सुभिक्ष, गगन गमन है प्रत्यक्ष ।
अनुकंपा सबहिधार, अभयदान भायो ॥ टेक ॥
बाधा नाहिं होत जहाँ, विद्या के ईश महा ।
कवला आहार रहित, अचरज प्रगटायो ॥ टेक ॥
बढ़ें नहिं नखरु केश, छाया तनकी न लेश ।
दृगन पलक लगत नहिं, प्रगट यों लखायो ॥ टेक ॥
अतिशय केवल मंझार, कहे प्रकट दश प्रकार ॥
रहे प्रभु निर्विकार, ज्ञान, ज्योति छायो ॥ टेक ॥
दिव्यध्वनि खिरैमार निर्मल दिशि दिपत चार ।
मैत्री सब जीवधार, जय २ गुण गायो ॥ टेक ॥
चरनन तल कमल रचत, कांच वर्ण धरा खचत ।

पवन चलत मंद मंद, गंध प्रचुर छायो ॥ टेक ॥
गंधोदक वृष्टि सार, हर्ष भयी सृष्टिधार ।
भूमि विषैं कंटक नहिं, जैन बैन गायो ॥ टेक ॥
मंगल वसु द्रव्य सर्व, धर्म द्रव्य चले अग्र ।
प्रातिहार्य बसु प्रकार, ललत मोद छायो ॥ टेक ॥
अष्टादश दोष रहित, भये प्रभु स्वगुण सहित ।
ततक्षण केवल उपाय, मोक्ष रमन पायो ॥ टेक ॥
सुर नर सब हर्ष मान, पूजे गुण गन निधान ।
दीजे प्रभु मुक्त थान, चरन शीस नायो ॥ टेक ॥
पावापुर सिद्ध क्षेत्र, पायो प्रभु अचल खेत ।
'दुलीचंद' चरन पूज्य, जन्म सफल भायो ॥ टेक ॥

---

* दोहा *

श्री अतिवीर जिनेश को, जो पूजै मन लाय ।
मन वांछित फल सो लहै, निश्चिय शिवपुर जाय ॥

प्रभाती ।

सन्मति प्रभु दरश करत हरष उर न माई ॥ टेक ॥
पावापुर शुभ स्थान, आये सुर गण महान ।
पूजे बहु हर्षमान, परम प्रीत लाई ॥ टेक ॥
अष्ट द्रव्य ले उदार, कंचन मय पूर्त थार ।
मुख से जय २ उचार, चरनन चित लाई ॥ टेक ॥
जन्म सफल भयो आज, पूरे सब सुमन काज ।
पायो सब सुख समाज, जै २ जिनराई ॥ टेक ॥
इन्द्रादिक सुगुन गाय चरणों में शीस नाय ।
'दुलीचंद' कार्तिक बदि मावस मुक्ति पाई ॥ टेक ॥

प्रभाती ।

दीजे प्रभु दरश मोह महावीर स्वामी ॥ टेक ॥
तुमरे पद दरश करत होत सुपथ गामी ।
भव्यन मन मुदित होत जिन बच सुन स्वामी ॥टेक॥
समोसरन मध्य खिरत बानी जगनामी ।
सुनत नशत मोह ताप प्रगटत अभिरामी ॥ टेक ॥
प्रातिहार्य वसु प्रकार सोहत गुण ग्रामी ।
सुर नर मुन नमत आय हे अन्तर्यामी ॥ टेक ॥
सूकर अहि नकुल श्वान चोर भये अकामी ।
ऐसो लख 'दुलीचद' शरण प्रभु गहामी ॥ टेक ॥

भैरवी ।

दरश मन हरषत श्री महावीर ॥ टेक ॥
जैसे चंद्र चकोर निरख के, प्रमुदित होत गहीर ॥ टेक ॥
राग द्वेष वर्जत अघ तर्जत नाशत भव की पीर ॥ टेक ॥
पावापुरी पद्म सरवर विच, काटी कर्म जंजीर ॥ टेक ॥
हो निकलंक पंक बिन जैसे, सोहत निर्मल नीर ॥ टेक ॥
'दुलीचंद' कातिक बदि मावस, पूजे सुर नर भीर ॥ टेक ॥

भैरवी ।

चलो सखि पूजन वीर जिनेंद्र ॥ टेक ॥
सिद्धारथ नृप नंद सुखाकर, वंदत इन्द्र मुनिंद्र ॥ टेक ॥
समोसरन राजत कमलासन, ढोरत चमर सुरेन्द्र ॥ टेक ॥
निर अक्षर ध्वनि खिरत मेघ-ज्यों हरषे भव गुण वृन्द ॥ टेक ॥
चव अघातिया घात कहो प्रभु, केवलज्ञान अमंद ॥ टेक ॥
'दुलीचंद' कातिक बदि मावस पायो परमानंद ॥ टेक ॥

लावनी ।

पूजन को चलिये पावापुर नर नारी,
जहां वीर प्रभु ने जाय वरी शिवनारी ॥ टेक ॥

निरवान कल्यानक हेत सुराधिप आये,
बंदन कर श्री जिनराज परम सुख पाये,
स्तुति कर नाना भांति सुयश उचारी ॥ टेक ॥
पूजन को चलिये पावापुर नर नारी,
जहां वीर प्रभु ने जाय बरी शिवनारी ॥ टेक ॥
भये निर्विकार आकार रहित जिन स्वामी,
निश्चल अनंत सुख पूर लहा जगनामी,
प्रभु जन्म जरा मृत रहित भये अविकारी, ॥ टेक ॥
मायाकृत कच नख रचे भक्ति हितकारी,
किये अग्नि कुमाग्न भस्म जाल विस्तारी,
ले भस्म विनय युत सुर नर मुनि शिर धारी ॥ टेक ॥
गये सब सुर निज २ धाम कल्यानक करके,
पुरजन मिल उत्सव कियो हर्ष उर धरके,
कहैं 'दुलीचंद' धन घड़ी आज उपकारी ॥ टेक ॥

गजल ।

महावीर चलो पूजन हिल मिल के आज जी ॥ टेक ॥
गंगादि नीर भर २ कंचन की झारियां,
केशर मिलाय बंदों जिनराज आज जी ॥ टेक ॥
तंदुल सफेद उत्तम बहु सुमन लायकें,
नैवेद्य मिष्ट क्षुधा हरन हेत आज जी ॥ टेक ॥
दीपक उद्योत करकें दश गंध धूप ले,
फल विविध भांति ताजे थाली में साज जी ॥ टेक ॥

बसु द्रव्य सुरुच धारो मन हर्ष भाव सों,
हो जन्म सफल मेरा पूरन हो काज जी ॥ टेक ॥
कहे 'दुलीचंद' पावापुर नग्र आपके,
इन्द्रादि करी पुजा निरवान काज जी ॥ टेक ॥

दादरा।

अवार मेरे प्यारे पूजन का चालो अवार ॥ टेक ॥
मुकट नये सिंघासन कंपे अवध से जाना विचार ॥ टेक ॥
सन्मति प्रभु निरवान पधारे पावापुरी के मंझार ॥ टेक ॥
सब सुरगण मिल वंदन चाले बोलें सबदि जय २ कार ॥ टेक ॥
आज जन्म मन सफल भया है छवि देखी जु निहार ॥ टेक ॥
'दुलीचंद' कार्तिक बदि मावस मोह बढो है अपार ॥ टेक ॥

दादरा।

सन्मति प्रभु आज हमको दरश दीजे ॥ टेक ॥
तुम्हरे दरश बिन प्यारे, सहे दुख भारे, भूलो निज काज ॥ टेक ॥
जागो है भाग हमारो, शरण तुम धारो,, रखियो मम लाज ॥ टेक ॥
जिन २ दरश तुम काना, करम रिपु छीना, सेवें सुर राज ॥ टेक ॥
मघवा सुधा सुर आवे, पूजन फल पावें, तुम को जिन राज ॥ टेक ॥
लखके छवी प्रभू तेरी, हरष मन हेरी, पूरे सब काज ॥ टेक ॥
तुमने अधम बहु तारे, जगतसे उबारे, जस गावें सुर राज ॥ टेक ॥
दुलीचंद' कार्तिक वदी मावस, कार्तिक वदि मावस,
पायो शिवराज ॥ टेक ॥